ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-3* June- 2021
Anthology : The Research

बीकानेर रियासत के प्रमुख दुर्ग

Major Forts of The Princely State of Bikaner

Paper Submission: 15/06/2021, Date of Acceptance: 26/06/2020, Date of Publication: 27/06/2021

अमित मेहता
सहायक आचार्य,
इतिहास विभाग,
राजकीय कला महाविद्यालय,
सीकर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्राचीन काल से ही दुर्ग या गढ़ शासकों या सामन्तों द्वारा सुरक्षा की दृष्टि से बनाये जाते रहे हैं। मनु ने धनुदुर्ग, महीदुर्ग, जलदुर्ग, वृक्षदुर्ग, सेना दुर्ग और गिरिदुर्ग का वर्णन किया है। राजस्थान की बीकानेर रियासत में भी शासकों तथा समन्तों ने दुर्ग या गढ़ का निर्माण करवाया। बीकाजी के किले का निर्माण बीकाजी ने नापासांखला की सलाह से सन् 1485 ई. में रावीघाटी पर करवाया था। इसके पश्चात् बीकानेर में जूनागढ़ किले का निर्माण 1594 ई. में करवाया गया। इसमें कर्णपोल, चांदपोल, दौलतपोल, फतेहपोल, रतनपोल, सूरजपोल और ध्रुवपोल हैं। इस किले के भीतर कई महल हैं। इनमे कांच की पच्चीकारी और सुनहरी कलम आदि का अति सुंदर कार्य हुआ है। इसी प्रकार बीकानेर रियासत में भटनेर (हनुमानगढ़), चुरू, सरदारशहर, बीकमपुर, राजगढ़ आदि स्थानों पर शासकों व सामन्तों द्वारा दुर्ग या गढ़ निर्मित करवाये गये। जिनकी दीवारें, बुर्ज और दरवाजे अत्यधिक सुदृढ़ व मजबूत थे। किलों या गढ़ों के चारों ओर गहरी खाई थी। दुर्गों में विशाल तथा भव्य राजप्रसाद व भवन बने हुए थे। गढ़ों में जल की आपूर्ति हेतु जलाशयों व कुओं का निर्माण करवाया गया था। इन गढ़ों या किलों में लगे शिलालेखों से तात्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक जीवन की जानकारी प्राप्त होती है।

Since ancient times, forts or bastions have been built by the rulers or feudatories for the purpose of protection. Manu has described Dhanudurga, Mahidurg, Jaldurg, Vrikshadurg, Sena Durg and Giridurg. Even in the princely state of Bikaner of Rajasthan, the rulers and feudatories built a fort or citadel. Bikaji's fort was built by Bikaji on the advice of Napasankhala in 1485 AD on Ravi Ghati. After this, Junagadh Fort was built in Bikaner in 1594 AD. There are Karnpol, Chandpol, Daulatpol, Fatehpol, Ratanpol, Surajpol and Dhruvapol. There are many palaces inside this fort. In these, beautiful work of glass mosaic and golden pen etc. has been done. Similarly, in the princely state of Bikaner, at places like Bhatner (Hanumangarh), Churu, Sardarshahar, Bikampur, Rajgarh, forts or forts were built by the rulers and feudatories. Whose walls, turrets and doors were very strong and strong. There was a deep moat around the forts or bastions. Huge and grand palaces and buildings were built in the forts. Reservoirs and wells were constructed to supply water to the forts. The inscriptions installed in these bastions or forts give information about the political, social, economic and religious life of the time.

मुख्य शब्द : दुर्ग, सुरक्षा, बीकानेर, स्थापत्य परम्परा।
Fort, Security, Bikaner, Architectural Tradition.

प्रस्तावना

दुर्ग या गढ़ शक्ति का केन्द्र होता हैं। सुरक्षा की दृष्टि से प्राचीनकाल में दुर्ग या गढ़ बनाये जाते थे। नगरों का निर्माण बाद में होता था, दुर्ग या गढ़ पहले बनता था। प्राचीन भारत में अनेक प्रकार के दुर्ग बनाये जाते थे। मनु ने धनुदुर्ग, महीदुर्ग, जलदुर्ग, वृक्षदुर्ग, सेना दुर्ग और गिरिदुर्ग का वर्णन किया है। सभी दुर्गों में गिरिदुर्ग को श्रेष्ठ बताया है। राजस्थान में भी दुर्ग निर्माण की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। यहां स्थान–स्थान पर किले बने हुए हैं। शासक हो या सामन्त वह अपने किले को निधि के रूप में समझता था।

अध्ययन का उद्देश्य

बीकानेर रियासत की दुर्ग स्थापत्य परम्परा का एतिहासिक एवं सांस्कृतिक विषेशताओं और विभिन्न कालों में उनके विकास के अध्ययन कर प्रमाणिक विश्लेषण प्रस्तुत करना, विभिन्न दुर्गों का वर्गीकरण करना, किलों में

निर्मित इमारतों की स्थापत्य कला का सूक्ष्म एवं प्रमाणिक विश्लेषण प्रस्तुत करना शोध पत्र का उद्देश्य है। इनके अतिरिक्त दुर्गों का तुलनात्मक अध्ययन, उनकी उपयोगिताओं का तार्किक विश्लेषण एवं दुर्गों या गढ़ों में लगे शिलालेखों का अध्ययन करना भी शेध पत्र के प्रमुख उद्देश्य हैं।

विशय विस्तार

बीकानेर रियासत के प्रमुख दुर्गों का इतिहास एवं स्थापत्य इस प्रकार है–

बीकाजी का किला

यह किला शहरपनाह के भीतर दक्षिण–पश्चिम में खण्डहर के रूप में ऊंची चट्टान पर निर्मित है।[1] इसका निर्माण राव बीकाजी ने नापासांखला की सलाह से सन् 1485 में रावीघाटी पर करवाया था और इसके पास ही संवत् 1488 में बीकाजी ने अपने नाम पर बीकानेर नगर भी बसाया। इस संबंध में यह दोहा प्रसिद्ध है[2]:–

पनरै से पैतालबै, खुद बैसाख सुमेर।
थावर बीज थरप्पियों, बीकै बीकानेर।।

इस किले को बीकाजी की टेकरी भी कहा जाता है। इसके समीप लक्ष्मीनाथ जी और गणेश जी का मन्दिर निर्मित है[3]।

बीकानेर का किला (जूनागढ़)

बीकानेर के किले को जूनागढ़ के नाम से भी जाना जाता है। इस किले की नींव 30 जनवरी 1586 को रखी गयी और यह आठ साल बाद 17 फरवरी 1594 को पूर्ण हुआ।[4] यह 1078 गज की परिधि में विस्तृत 14.5 फुट चौडी तथा 40 फुट ऊंची दीवारों से घिरा है। जूनागढ़ दुर्ग चर्तुभुजाकृति या चतुष्कोण आकार का है। किले की प्राचीर सुदृढ़ व मजबूत है। इसमें 37 विषाल बुर्ज हैं जो लगभग 40 फुट ऊंची है। किले के चारो ओर परिखा 20–25 फीट गहरी तथा इतनी ही चौड़ाई में बनी हुई है। पुर्वाभिमुखी प्रवेश द्वार का नाम कर्णपोल है तथा पश्चिमी दरवाजा चांदपोल कहलाता है। इनके अतिरिक्त पांच आन्तिरक द्वार हैं जो दौलतपोल, फतहपोल, रतनपोल, सूरजपोल और ध्रुवपोल कहलाते है[5]। सूरजपोल पीले पत्थरों से बना है। सूरजपोल दरवाजे पर इस किले के संस्थापक राजा रायसिंह जी की प्रशस्ति उत्कीर्ष है, जिससे उनकी उपलब्धियों की प्रमाणिक जानकारी प्राप्त होती है। दुर्ग के इसी प्रवेशद्वार पर अपने वीरपतियों के साथा सती होने वाली ललनाओं के हाथ के छापे भी अंकित हैं। सूरजपोल के दोनो पार्श्वों पर विशालकाय हाथी पर आरूढ़ दो मूर्तियां हैं जो प्रसिद्ध वीर जयमलमेड़तियां (राठौड़) और पत्ता चूंडावत (सीसोदिया) की बतलायी जाती है जो चित्तौड़ में बादशाह अकबर की सेना के साथ युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे[6]।

सूरजपोल के पार्श्व में गणेशजी का छोटा सा मन्दिर है। किले के भीतर बहुत बड़ा चौक है जिसमें एक तरफ पंक्तिबद्ध रूप में मर्दाने और जनाने महल हैं, जो बड़े सुंदर और भव्य हैं। इन महलों के भीतर कई जगह कांच की पच्चीकारी और सुनहरी कलम आदि का बहुत सुंदर काम हुआ है जो भारतीय कला का उत्तम नमूना है। इन राजमहलों की दीवारों पर रंगीन पलस्तर का कार्य हुआ है जिससे उनका सौंदर्य बढ़ गया है। राजमहलों के निर्माण में लगभग सभी राजाओं का योगदान रहा है।

किले के भीतर एक घंटाघर, दो बगीचे और चार कुंए हैं जो लगभग 360 फुट गहरे हैं। जूनागढ़ में निर्मित राजप्रसाद समन्वयित संस्कृति के प्रतीक हैं क्योकि इनके निर्माण में हिन्दू और मुस्लिम कला शैलियों का समन्वय हुआ है। इन महलों की बनावट परम्परागत राजपूत शैली पर आधारित है जबकि इनकी सजावट और अलंकरण में मुगल शैली की प्रधानता है[7]।

भटनेर का किला

यह बीकानेर से लगभग 144 मील उत्तर–पूर्व में हनुमानगढ़ में निर्मित हैं। घग्घर नदी के मुहाने पर स्थित इस प्राचीन दुर्ग को उत्तरी सीमा का प्रहरी कहा जाता है, क्योंकि मध्य एशिया से होने वाले आक्रमण प्रायः इसी तरफ से होते थे। जनश्रुति के अनुसार इस किले का निर्माण तीसरी शताब्दी के अन्तिम चरण में भाटी राजा भूपत ने करवाया था। मरूस्थल से घिरा होने के कारण भटनेर के दुर्ग को शास्त्रों में वर्णित द्यान्वन दुर्ग की श्रेणी में रखा जाता है। यह किला लगभग 50 बीघा में फैला हुआ है।[8] चारों ओर की दीवारों पर बुर्ज बने हैं। किले का एक द्वार बहुत प्राचीन प्रतीत होता है। दयालदास के अनुसार यह दुर्ग अनेक बार नश्ट हुआ एवं पुनः निर्मित हुआ है।[9] किले के एक द्वार के एक पत्थर पर वि.सं. 1677 (1620ई.) खुदा हुआ है। उसके नीचे राजा का नाम तथा छः रानियों की आकृति भी बनी थी जो अब स्पश्ट नहीं है। संभवतः ये आकृतियां बीकानेर के शासक दलपतसिंह और उनकी रानियों की है जो दलपत सिंह की मृत्यु के बाद भटनेर में सती हुई थी। किले में एक फारसी लिपि में लेख उत्कीर्ण है जिससे पता चलता है कि बादशाह की आज्ञा से कछवाह राव मनोहर ने यहां मनोहरपोल नामक दरवाजा बनवाया था[10]।

महाराजा सूरत सिंह ने इस किले को 1805 ई. में जावत खां से छीना और बीकानेर का मंगलवार के दिन इस पर अधिकार होने के कारण इस किले में छोटा से हनुमान जी का मंदिर बनवाया गया और उसी दिन से इसका नाम हनुमानगढ़ पड़ गया[11]।

चुरू का किला

इसकी नींव मालदेव की चौथी पीढ़ी में 1739 ई. में रखी गयी। उसने इस स्थान से गुजरने वाले व्यापारिक काफिलों को समुचित सुरक्षा प्रदान की। इसके फलस्वरूप यहां ऊन और अफीम का व्यापार बढ़ गया। यह किला 9 बुर्जी है और इसका सिंह द्वार पश्चिमोभिमुखी है जो आस–पास के धरातल से लगभग 10 फुट ऊंचा है[12]। सिंह द्वार के किवाड़ी के ऊपरी भाग में लोहे की मोटी एवं नुकीली शलाखें जुडी हुई हैं जिससे किवाड़ काफी मजबूत हो गया है और इसे आसानी से तोड़ा नहीं जा सकता। फाटक के अन्दर ऊपर की तरफ नक्कारचियों के बैठने का स्थान है। इसके द्वार के आगे पक्का खुर्रा निर्मित है। किले के दक्षिणी पूर्वी भाग के मकानों में ऊपर ठाकुरो के मकान और नीचे कचहरी थी। इसके पास ही कई पुराने मकान हैं जिनकी छतें टूटी हुई हैं। संभवतः ये छतें चुरू के किसी घेरे में पत्थरों के गोलों की मार से टूटी होगी। किले के उत्तरी भाग में वि.सं. 1874 की मेहता मेघराज की

देवली तथा एक पुराना कुआं है। इस किले के पूर्वी भाग में ठाकुर शिवसिंह द्वारा निर्मित भव्य मंदिर स्थित है। मंदिर के आगे कुछ दक्षिण की ओर भूतपूर्व बीकानेर राज्य के समय में निर्मित अदालतें हैं[13]। इस किले का परकोटा मजबूत है जो चौडी व ऊंची दीवारों युक्त है। इन दीवारों में चारो ओर मोरचे बनाये हुए हैं[14]।

चुरू के ठाकुर षिवसिंह ने जो बीकानेर के अधीन एक सरदार था, जब पेशकस का पैसा देने में आनाकाना की और अपने को स्वतंत्र मानने लगा तो महाराजा सूरत सिंह, बीकानेर की फौज ने किले को घेर लिया। जब गोला बारूद सर्वथा समाप्त हो गया तो ठाकुर शिवसिंह ने चुरू के नागरिकों द्वारा लाकर दिये गये चांदी के सिक्कों के गोले ढलवाए और उन गोलो को तोपों के दहानों में भरकर बीकानेर की सेना पर दागा था। कुछ दिनों की लडाई के बाद शिवसिंहजी ने आत्महत्या कर ली और किले का पतन सन् 1814 में हो गया[15]।

सरदार शहर का किला

यह किला नगर के मध्य बाजार में एक उन्नत स्थान पर निर्मित है। इस किले की प्राचीरें ऊंची तथा सुदृढ़ हैं जिनमें बीच–बीच में उन्नत और गोलाकार बुर्जे बनी हुई है। इस दुर्ग का निर्माण बीकानेर के महाराजा रतन सिंह के शासनकाल में करवाया गया था। दुर्ग का मुख्य द्वार विशाल और उन्नत है। इस दुर्ग का तोरण द्वार उन्नत होने से दूर से ही दिखयी देता है। इस पर दो पाटों के विशाल फाटक लगें हैं जिन में लोहे की शलाकाएं जडी हैं। यह किला नगर की सुरक्षा हेतु संवत् 1895 में बनवाया गया था[16]।

बीकमपुर का गढ़–

उज्जैन के वीर विक्रमादित्य पंवार ने अपने नाम पर बीकानेर नगर के कोलायत पंचायत समिति के बीकामपुर गांव व गढ़ की स्थापना वि.स.2 (55 ई.पू.) में की थी। यह गढ़ जमीन से 50–60 फुट ऊपर एक टीले पर निर्मित था और इसके चारों ओर गोलाकार चारदीवारी व 84 बुर्ज थे। चारदीवारी इतनी चौडी थी कि इस पर हाथी चल सकते थे। वर्तमान में यह चारदीवारी व बुर्ज ढ़ह गये हैं। इनमें से केवल चारदीवारी का कुछ भाग व दो बुर्ज अवशिष्ट के रूप में बचे हैं। इसमें राजा का राजप्रसाद, रनिवास, बारादरी, उत्तराभिमुख विशाल विष्णु, शिव व सूर्य के मन्दिर बने हुए थे। किले का मुख्य प्रवेश द्वार अभी भी खड़ा है। इसके ऊपर सं 1111 का शिलालेख भी उत्कीर्ण है, जो किले के जीर्णोद्धार के बारे में बताता है। इसका द्वितिय द्वार भी विक्रमादित्य द्वारा निर्मित बताया जाता है। इसमें बारादरी भी है। किले में वि.सं.1522 में तत्कालीन बीकानेर शासक ने एक सुन्दर मंजिल कलात्मक झरोखों युक्त बनवाई। इस पर, इस निर्माण से संबंधित एक शिलालेख भी उत्कीर्ण करवाया गया[17]।

राजगढ़ का गढ़–

यह किला 20 फीट ऊंची और 3 फीट चौडी विशाल दीवारों से बना है। इसके चारों कोनो पर विशाल बुर्ज हैं जिनमें इस प्रकार से सुराख रखे गए हैं, जिनसे सैनिक बाहर खडे शत्रुओं से मोर्चा ले सकें। गढ़ की ऊंची दीवारों के चारो ओर 20 फीट गहरी और 15 फीट चौडी खाई थी, जिसमें बरसात का पानी भरा रहता था। इस गढ़ के दो दरवाजे थे, एक प्रवेश द्वार था जिसका मुख पूर्व की ओर है। इस द्वार में घुसने के बाद गढ़ का एक बाहरी प्रांगण आता है। इस प्रांगण में गढ़ के मुख्य द्वार के बिल्कुल सामने कुछ गज की दूरी पर एक बुर्ज था। वर्तमान में बुर्ज को गिराकर गढ़ के मुख्य द्वार से अंदर जाने का सीधा मार्ग बना दिया गया है। अब प्रवेश द्वार में घुसते ही सामने दक्षिण की ओर गढ़ का मुख्य द्वार दिखाई देता है। गढ़ के भीतर पानी की व्यवस्था करने के लिए एक कुंड बना हुआ था। घोड़ो और ऊंटों के लिए अस्तबल और स्थान बने हुए थे। किले के अन्दर अपराधियों व शत्रुओं को कैद में रखने के लिए कारागृह बने हुए थे। उस समय सारा नगर परकोटे के अन्दर था और उसके बाहर चारों ओर बहुत गहरी और चौडी खाई थी। शहर पनाह के चारो गेट के सामने कुछ दूरी पर चार चौकी गेट थे। पश्चिम की ओर का चौकी गेट दादू द्वारे के पास था। मोदी गेट के बाहर कुछ दूरी पर एक धूल कोट था, जिसके पास ही एक चौकी गेट था। वर्तमान में अस्पताल के कुछ आगे सेठ कन्हैया लाल सुराणा की हवेली के पास डौकवा दरवाजा था। उत्तर में मरदा गेट के बाहर शीतला चौक के समीप भी एक चौकी गेट था।

निष्कर्ष

बीकानेर रियासत के किलों के निर्माण में सुदृढ़ता एवं सुरक्षा का पूर्ण ध्यान रखा गया है। चार शताब्दियां बीत जाने के बाद भी उनकी सुदृढता स्पष्ट परिलक्षित होती है। यहां के निर्माण कार्यों में 18वी शताब्दी तक प्राचीन एवं मध्यकालीन भारतीय तकनीकों को अपनाया गया है लेकिन बाद में पाश्चात्य प्रभाव दृष्टिगत होता है। यहां के किलों में निर्मित भवनों की ऊंचाई को आनुपातिक सीमा तक बढ़ाकर भवनों की संख्या में वृद्धि की गयी है तथा उसके क्षैतिज विस्तार को बढ़ने से रोका गया है। इससे एक तरफ राजप्रसादों के स्थापत्य की सघनता, सुसंहति तथा सुसम्बद्धता में वृद्धि हुई है वहीं दूसरी ओर निर्माण कार्य कम खर्चीला एवं अधिक उपयोगी बन गया है। बीकानेर रियासत के इन दुर्गों को देखने के लिए प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में पर्यटक आते हैं जिससे न केवल लोगों के लिए रोजगार उत्पन्न होता है अपितु इस क्षेत्र का सांस्कृतिक विस्तार देश–विदेश में भी होता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *दीनानाथ खत्री – बीकानेर राज्य का इतिहास, पृष्ठ 7*
2. *मोहनलाल गुप्ता – बीकानेर, जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृष्ठ 21*
3. *बीकानेर संवाद, पृष्ठ 29*
4. *दीनानाथ दुबे – भारत के दुर्ग, पृष्ठ 84*
5. *डॉ. राघवेन्द्र सिंह, मनोहर – राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, पृष्ठ 115–116*
6. *गौरीशंकर हीराचन्द ओझा – बीकानेर राज्य का इतिहास, पृष्ठ 45*
7. *डॉ. राघवेन्द्र सिंह, मनोहर – राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, पृष्ठ 117*

8. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा – बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग 1, पृष्ठ 64
9. दयालदास सिदालय – दयालदास की ख्यात, पृष्ठ 53
10. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा – बीकानेर राज्य का इतिहास, पृष्ठ 64–65
11. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा – बीकानेर राज्य का इतिहास, पृष्ठ 66
12. प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर
13. गोविन्द अग्रवाल – चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास, पृष्ठ 317
14. रतनलाल मिश्र – सरदार शहर परिदर्शन, पृष्ठ 158
15. राजस्थान टूरिज्म पत्रिका, चुरू, पृष्ठ 1
16. रतनलाल मिश्र – सरदार शहर परिदर्शन, पृष्ठ 158
17. मोहनलाल गुप्ता – बीकानेर, जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृष्ठ 34–35